National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(8): 22-25
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**Mrs. Sunita Narayan Joshi**
Plot No. 70 , P. & T. Colony,
Rana Pratap Nagar,
Nagpur - 440022

# ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शारीरिक दुर्घटना के योग

**सौ. सुनिता नारायण जोशी**

**'शरीर माध्यम खलु धर्मम् ।'**

अर्थात् शरीर यदि बलवान हो तो कोई भी कार्य हो सकता है। किसी भी संकट का सामना आदमी कर सकता है । ज्योतिष शास्त्र के आधार से किसी भी घटना का समय निर्धारित किया जा सकता है ।

**प्रस्तावना :**

ज्योतिषी होने के कारण लोग अपनी समस्या का समाधान करने के लिए मेरे पास आते हैं । ' जातक की कुंडली यदि दुर्घटना योग दर्शाती है तो उन्हे सही तरीके से हल और उपाय मिले तो उन्हे फायदा होता है ।' इस विचार से प्रेरीत होकर मै यह अभ्यास सखोल तरीके से कर रही हूँ और मार्गदर्शन कर रही हूँ । होनेवाली दुर्घटना टाली नही जा सकती, किंतु दुर्घटना बडे रूप में ना हो के छोटे स्वरूप में परीवर्तित हो, इस का प्रयास निश्चित रूप से किया जा सकता हैं।

उद्देश यह है कि, **' सर्वे संतु निरामयः।'**

आजकल की भागदौड की जिंदगी में शारीरिक दुर्घटना होने की संभावना काफी बढ गयी है। ज्योतिष शास्त्र के आधार से शारीरिक दुर्घटना समझी जा सकती हैं। दुर्घटना में शारीरिक जख्म होना या मौत होना या सहीसलामत मौत के मुँह से वापस आना यह समझा जा सकता है। जीवन में शारीरिक दुर्घटना के योग को कैसे टालें व जीवन को कैसे सुरक्षित रखें इसिलिए मैने **' ज्योतिष शास्त्र के आधार से शारीरिक दुर्घटना के योग'** इस विषय का चयन किया हैं।

दुर्घटनाएं दो प्रकार की होती हैं । 1. वैयक्तिक जीवन में होनेवाली शारीरिक दुर्घटना और 2. जागतिक स्तर पर होनेवाली (' मेदिनीय' ) शारीरिक दुर्घटना । मैने अभ्यास के लिए ' वैयक्तिक जीवन में होनेवाली शारीरिक दुर्घटना' इस विषय का विश्लेषण व अध्ययन किया है। जैसे, वाहन दुर्घटना, जल दुर्घटना, विमान दुर्घटना, अग्नि दुर्घटना आदि प्रकार की दुर्घटनाओं का ज्योतिष शास्त्र के आधार से विश्लेषण किया हैं।

**ज्योतिष शास्त्र में फलित देखने की कई पद्धतियाँ है।**

1.वैदिक ज्योतिष पद्धती 2. पाश्चात्य फलज्योतिष पद्धती एवं 3. जैमिनी पद्धती.

1.वैदिक ज्योतिष पद्धती : महर्षी पाराशरजी का ' बृहद् पाराशरी होराशास्त्र' इस पद्धती का मूलभूत आधार हैं । इस में 27 नक्षत्र, 9 ग्रह, 12 राशी और 12 भाव इन का सम्यक विचार, आपस में होनेवाले योग इनका विचार किया जाता है। मंगल, शनि और राहु ये पापग्रह दुर्घटना होने के लिए जिम्मेदार ग्रह है। गुरु और शुक्र शुभ प्रभाव देते हैं ।

2.पाश्चात्य फलज्योतिष पद्धती : इस पद्धती में 27 नक्षत्र, 12 ग्रह, 12 राशी और 12 भाव इन

**Correspondence:**
**Mrs. Sunita Narayan Joshi**
Plot No. 70 , P. & T. Colony,
Rana Pratap Nagar,
Nagpur - 440022

का सम्यक विचार, आपस में होनेवाले योग इनका विचार किया जाता है। इस पद्धती में हर्षल, नेपच्युन और प्लुटो इन ग्रहों का और इन के बाकी ग्रहों से होनेवाले अंशात्मक योगों का विचार किया जाता है। अचानक होनेवाली दुर्घटना हर्षल के कारण होती है, ऐसी पाश्चात्य ज्योतिषदर्शीयों की मान्यता है और वैसे ही परिणाम प्राप्त हुए है। गुढ दुर्घटना में नेपच्युन और उस के बाकी ग्रहों से होनेवाले अंशात्मक योगों का प्रभाव देखा जाता है। जागतिक स्तर पर होनेवाली बडी दुर्घटना - मेदनीय दुर्घटना में प्लुटो इस ग्रह का सब से ज्यादा प्रभाव देखा जाता है।

**नियम :**

दुर्घटना के अभ्यास के लिए निम्नलिखित मुद्दों पर विचार होना जरूरी हैं :

**1. भाव विचार** **2. ग्रह विचार**
**3. राशी विचार** **4. नक्षत्र विचार**

जातक की कुंडली में दुर्घटना के लिए मूलते त्रिक स्थानों का विचार किया जाता है, जैसे 6-8-12 भाव, इन भावों में स्थित ग्रह, इन भावों के स्वामी, षष्ठेशयुक्त वा दृष्ट ग्रह कारक होते है ।

पापग्रहयुक्त/दृष्ट लग्न और लग्नेश कमजोर होने के कारण दुर्घटना होती है । लग्न राशीसंधी में होने से भी दुर्घटना होती है ।

षष्ठ भाव में स्थित राशी, ग्रह, षष्ठ भाव के अधिपती, ग्रहयोग, ग्रहदृष्टी बहुत महत्वपूर्ण है । लग्न तथा लग्नेश देहभाव दर्शाते है । उन का परीक्षण करना जरूरी है।

अष्टम भाव के स्थित ग्रह, अष्टम भाव पर दृष्टी योग, अष्टमेश की कुंडली में स्थिती इनसे आयुर्सीमा का ज्ञान होता है ।

तृतीय स्थान कुंडली में अष्टम भाव का अष्टम होने के कारण उसे **' सहायक मृत्युस्थान'** कहते है । तृतीय भाव सफर दर्शाता है । सफर में घटनेवाली दुर्घटनाएँ इस भाव से देखी जाती है । तृतीय स्थान में स्थित ग्रह, दृष्टी रखनेवाले ग्रह, तृतीयेश की स्थिती इन सब का विचार किया जाता है । तृतीय स्थान का अधिपती 6/8/12 से संबंधित है या दृष्टी है यह देखना अनिवार्य है। तृतीय स्थान का स्वामी पापमध्य या पापकर्तरी में होने से शनि, मंगल, राहु से योग होने से सफर में दुर्घटना होती है । ऐसे योग में सूर्य और शनि अशुभ हो तो अस्थिभंग होने की संभावना रहती है ।

पापग्रह जिस राशी में स्थित है, वह राशी, नीच राशी में स्थित ग्रह, अस्तंगत ग्रह, लग्न, लग्नेश, मारक (द्वितीयेश और सप्तमेश ग्रह), क्रूर षष्ठ्यांशगत ग्रह तथा बालारिष्टकारक चंद्र दुर्घटना घटने के लिए कारक होते हैं । यहाँ ग्रहों की शक्ति, शुभाशुभत्व इनका सम्यक विचार होना अति महत्वपूर्ण है ।

चंद्र नक्षत्र से तृतीय, पंचम और सप्तम (3-5-7) नक्षत्र अशुभ कहे जाते है। अष्टमेश 3/5/7 नक्षत्र में होने से दुर्घटना होती है ।

दुर्घटना के लिए ग्रहों के अशुभ योग, महादशा-अंतर्दशा, दशानाथ जिम्मेदार होते है। षष्ठ, अष्टम, व्यय भाव दुर्घटना के कारक होते है । इसलिए उनके स्वामी भी दुर्घटना के कारक होते हैं । यहाँ सूर्य और चंद्र ये दो ग्रह अपवाद हैं। वे लग्न या अष्टम भाव के स्वामी हों तो उन्हे दोष नही लगता । वे अशुभ फल नही देते ।

कोई राशी जन्मकुंडली के साथ नवमांश कुंडली में भी अशुभ है, उस का स्वामी शत्रुग्रह से पीडित हो, अशुभ स्थान में स्थित हो, उस का शनि के साथ परस्पर संबंध योग हो तो दुर्घटना होने के साथ शारीरिक व्यंग होने की भी संभावना रहती है ।

इन सभी के साथ **' त्रिशांश कुंडली'** का अभ्यास किया जाता है । त्रिशांश कुंडली में अष्टम स्थान, अष्टम भाव, अष्टम भाव का अधिपती, शनि, सूर्य, राहु, केतु इन सभी ग्रहों का परस्पर संबंध दृष्टीगोचर होने से दुर्घटना की संभावना रहती हैं ।

घटना समय निर्धारण ग्रहों के भ्रमण (गोचर भ्रमण) से तय किया जाता हैं। अशुभ ग्रह के षष्ठ, अष्टम भाव से गोचर भ्रमण दुर्घटना के कारण होते है।

सारांश में, यह कहना चाहती हूँ कि :

लग्न स्थान (प्रथम भाव), लग्नेश, षष्ठ, अष्टम, व्यय, तृतीय भाव इनके नीचे दिये गये योग में दुर्घटना घटने की संभावना रहती है ।

**भाव में पाप ग्रह, शत्रु ग्रह, नीच ग्रह, अस्तंगत ग्रह, भाव पर पाप ग्रह की दृष्टी और यह भाव पापकर्तरी में हो तो ।**

इन भावों के स्वामी का विचार करना उतना ही महत्वपूर्ण है । भावों के स्वामी, नीच, अस्तंगत, शत्रु ग्रह में, क्रूर नक्षत्र में, पापमध्य में, गंडांत में हो, 3/5/7 नक्षत्र में हो या 6/8/12 स्थान में हो, 6/8/12 स्थानों के स्वामी के साथ हो, राहु-मंगल-शनि-केतु आदि पापग्रह के साथ हो या उन की दृष्टी में हो ।

**उदाहरण :**

**उदाहरण के लिए कुंडली :**

**कुंडलीः जन्म तारीख 16.12.1964, समय 00.45, जन्मस्थानः(74पू.43, 19उ.58)**

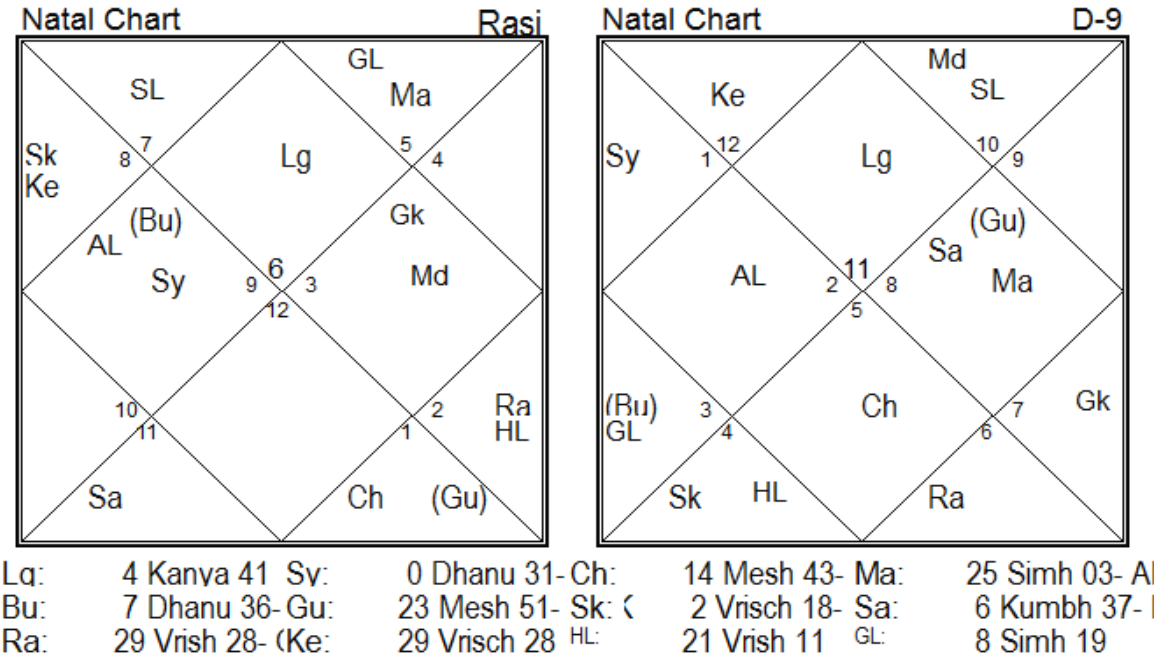


1. लग्न कुंडली में कन्या राशी उदित है । यह द्विस्वभावी राशी है । इस पर राहु (पापग्रह) की नवम दृष्टी हैं । इसिलिए लग्न भाव (देह) कमजोर है । षष्ठेश शनि (पापग्रह) की तृतीय दृष्टी अष्टम स्थानस्थित चंद्र पर होने से कुंडली जातक के जीवन में ' बालारिष्ट योग' यानि बचपन में दुर्घटना से मौत के योग दर्शाती है। किंतु चंद्र गुरु (शुभ ग्रह) के साथ होने से यह दुर्याग टल गया है। दुर्घटना हुई, किंतु मौत टल गयी।
2. इस कुंडली में गुरु चतुर्थेश एवं सप्तमेश है । गुरु ग्रह शुभ तो है, किंतु इस कुंडली में सप्तमेश (मारकेश) होने के कारण अशुभ भी है । लग्नेश बुध पर सप्तमेश (मारकेश) गुरु की दृष्टी होने के कारण जातक के साथ दुर्घटना होने के योग बढते है ।
3. चतुर्थ स्थान का (वाहन का भाव) स्वामी यानि चतुर्थेश गुरु शुभ ग्रह होने के कारण जातक को वाहन दुर्घटना से बचाता भी है।
4. षष्ठेश शनि की तृतीयेश-अष्टमेश मंगल पर सप्तम दृष्टी होने से दुर्घटना होती है। दुर्घटना देखने से ऐसा लगता है कि, जातक की इस में मौत होना है। किंतु गुरु (शुभ ग्रह) की मंगल पर पंचम दृष्टी होने के कारण जातक मौत के मुँह से वापीस आता है।
5. साथ ही साथ षष्ठेश शनि की तृतीय स्थान में स्थित वाहन के कारक शुक्र पर दशम दृष्टी होने से वाहन दुर्घटना होती है। तृतीय स्थान सफर दर्शाता है। इसिलिए सफर के दौरान जातक वाहन दुर्घटना का शिकार होते रहता है। पापग्रह राहु भी सप्तम दृष्टी तृतीय स्थान में स्थित शुक्र पर होने से दुर्घटना होने की संभावना को दर्शाता है।
6. कुंडली में अनेक ग्रहयोग और भी है जो दुर्घटना और सुरक्षा दोनों दर्शाते है ।
7. त्रिशांश कुंडली में वृष यह स्थिर लग्न उदित हैं । यह शुभ योग हैं। लग्न में लग्नस्वामी शुक्र स्थित होने से लग्न भाव बलवान हुआ हैं । इस कारण उस पर सप्तम भाव से राहु और केतु, षष्ठ भाव से मंगल इन पाप ग्रहों दृष्टी का असर नही हुआ । अष्टमेश गुरु द्वितीय भाव में स्थित होकर अष्टम भाव पर शुभ दृष्टी दे रहा हैं। शनि कुंभ राशी (स्वराशी) में दशम भाव में स्थित हैं । चंद्र अष्टम भाव में

स्थित है। दुर्घटना योग दर्शाता हैं । किंतु वह गुरु की शुभ दृष्टी के कारण बलवान हुआ हैं । सूर्य व्यय भाव और चंद्र अष्टम भाव में होते हुए भी उन्हे स्थानदोष नही लगता और वे अशुभता नही देते ।

8. जनम के समय तृतीय भाव स्थित शुक्र और अष्टम भाव स्थित चंद्र (बालारिष्ट योग) के कारण जातक के साथ दुर्घटना हुई । किंतु जातक जीवित बचा । जातक अष्टम भाव स्थित चंद्र की महादशा में, अष्टमेश मंगल की महादशा में, नवम भाव स्थित राहु की महादशा में बहुत बार वाहन दुर्घटना में जख्मी हुआ । किंतु शुभ गुरु की लग्नस्वामी बुध पर दृष्टी होने के कारण शारीरिक व्यंग नही हुआ । जातक को बताये गये उपाय वह नियमितता के साथ करने के कारण उस की रक्षा हो रही हैं ।

**उपाय :**

कुंडली में पंचम स्थान यह मंत्र उपासना दर्शाता है। पंचमेश शनि षष्ठ स्थान में स्थित हैं और उस शनि पर राशीस्वामी मंगल की व्यय भाव से सप्तम दृष्टी हैं। शनि ग्रह की देवता भगवान शिवजी हैं और मंगल के देवता भगवान कार्तिकेय हैं। जातक भगवान शिवजी की प्रदोष पूजा, शिवलीलामृत के पाठ, रुद्राभिषेक द्वारा उपासना और भगवान कार्तिकेय के कवच का पाठ करता रहे तो उस की जीवन में दुर्घटना से बचने की और सुरक्षित जीवन की संभावना बढती हैं । शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए तथा दीर्घायु के लिए यह अथर्ववेद में लिखी हुई प्रार्थना भगवान से रोज करे :

**पश्येम शरदः शतम् । जीवेम शरदः शतम् । बुध्येम शरदः शतम् ।**
**रोहेम शरदः शतम् । पूषेम शरदः शतम् । भवेम शरदः शतम् ।**
**भूयेम शरदः शतम् । भूयसीः शरदः शतात् ।**

- (अथर्ववेद, काण्ड 19, सूक्त 67)

**सन्दर्भ सूची :**

1. ‘ बृहद् पाराशरी होराशास्त्र’ , महर्षी पाराशरजी
2. ‘ फलदीपिका’ , पं. गोपेशकुमार ओझा
3. ‘ जातक पारिजातः’ , हरिशंकर पाठक
4. ‘ मेडिकल ॲस्ट्रॉलॉजी - कुंडलीद्वारे रोगनिदान’ , ज्योतिषभास्कर सुरेन्द्र पै
5. ‘ आयुर्निर्णयः’ , आचार्य दैवज्ञ मुकुंद, भाष्यकार डॉ. सुरेशचंद्र मिश्र

**शुभम् भवतु ।।**